दिनांक 07 फरवरी, 2014 को अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में **"कृषि–उत्पाद क्षेत्र पर प्रत्यक्ष विदेश निवेश का प्रभाव"** विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है. संगोष्ठी का आयोजन महाविद्यालय के प्रबंध समिति के अध्यक्ष लाला श्री रतन सिंह गुप्ता और प्राचार्य डॉ0 कृष्णकान्त गुप्ता के सरक्षण में किया जा रहा है.

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ0 सुरिदंर कुमार, निदेशक, गिरी इन्स्टीटयूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, लखनऊ तथा मुख्य वक्ता प्रो0 आर.के मित्तल, जी.जी.एस.आई.पी.यू. नई दिल्ली तथा महाविद्यालय प्रबंध समिति के उपप्रधान डॉ0 वासुदेव गुप्ता के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया.

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 कृष्णकान्त गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया. उन्होंने कहा कि भारत की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के बदलते हुए स्वरूप को समझने के लिए तथा समाज पर पडने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव को जानना अति आवश्यक है. इस समसामयिक विषय पर संगोष्ठी का आयोजन करने के लिए उन्होंने संयोजक समिति का उत्साह वर्धन किया.

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के उपप्रधान डॉ0 बासुदेव गुप्ता ने महाविद्यालय में संगोष्ठी के आयोजन पर आयोजक समिति को बधाई दी और कहा कि इस संगोष्ठी से नीति जागरण में सहायता मिलेगी. संगोष्ठी मे कुल छः तकनीकी सत्र होगें. तीन सत्र 7 फरवरी तथा 3 सत्र 8 फरवरी को चलाएं जाएगें.

संगोष्ठी में 100 से अधिक शोधपत्र प्राप्त हुए हैं. जिन पर अलग–अलग राज्यों तथा विश्वविद्यालयों से आए हुए शोधार्थी, विद्यार्थियों, औद्योगिक प्रतिनिधियों द्वारा

विचार विमर्श किया जाएगा. भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष विदेश निवेश की बढती हुई भूमिका का तकनीकी मूल्यांकन किया जाएगा. भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है. कृषि क्षेत्र भी आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर है. कृषि उत्पादों पर पडने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना ही इस संगोष्ठी का उद्देश्य है.

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने कहा कि भारतीय कृषि क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की आवश्यकता है और नीतिपूर्वक तथा सावधानी पूर्वक ही इसे भारत में सफल बनाया जा सकता है. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत में रोजगार संभावना, तकनीकी उन्नति तथा सांस्कृतिक मूल्य भी लेकर आएगा जो कि भारत के क्षेत्रीय व्यवसायियों को प्रभावित करेगा.

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ने कहा कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत में तभी सफल है जब कृषि क्षेत्र के साथ उससे जुड़े हुए क्षेत्र जैसे डेयरी उद्योग, प्रोसेस्ड फूड, हार्टीकल्चर इत्यादि में भी समान रूप से निवेश किया जाना चाहिए.

तदोपरांत माननीय अतिथि महोदय के हाथों संगोष्ठी की प्रोसीडिंग पुस्तिका का विमोचन किया गया. संगोष्ठी के संयोजक डॉ0 अनिल सिघंल ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि शोधार्थियों, विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा औद्योगिक प्रतिनिधियों के लिए यह संगोष्ठी एक योग्य तथा सीखने वाला मूल्यवान अवसर साबित होगा. तत्पश्चात प्राचार्य महोदय ने शॉल तथा स्मृति चिह्न भेंट कर अतिथियों का सम्मान किया.

प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ0 आर.के. मित्तल ने की. इस सत्र में चार

प्रतिभागियों ने पी.पी.टी. के माध्यम से अपने पत्र प्रस्तुत किए. दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ0 जे.पी. शर्मा (उपप्राचार्य, गौड़ बाह्मण महाविद्यालय, रोहतक) ने की. डॉ0 एस.पी. सिंह (डी.जी.एम., एस.आई.डी.बी.आई) आमंत्रित वक्ता थे.

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ0 एस.पी. सिंह ने की तथा आमंत्रित वक्ता डॉ0 रेखा गोयल (एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, दयानन्द महाविद्यालय, फरीदाबाद) थीं.

इन तीनों तकनीकी सत्रों में विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से यही निष्कर्ष निकला कि दूसरी हरित क्रान्ति आनी चाहिए जिसके लिए कृषि के क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कुछ सावधानियों के साथ अनिवार्य है.